नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वैश्विक सुस्ती और अर्थव्यवस्था की रफ्तार

वैश्विक अर्थव्यवस्था इस समय अनिश्चितताओं के भंवर में फंसी हुई है, लेकिन भारत ने इस दौर में भी अपनी विकास गति को बनाए रखकर एक अलग मिसाल पेश की है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक की ताजा रिपोर्टों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत न केवल स्थिर है, बल्कि वैश्विक सुस्ती के बीच भी मजबूती से आगे बढ़ रहा है. यह आकलन उन तमाम आशंकाओं और दावों पर सीधा प्रहार करता है, जिनमें भारतीय अर्थव्यवस्था के कमजोर पड़ने की बात कही जा रही थी.

पिछले कुछ महीनों में एक खास तरह का नैरेटिव गढ़ने की कोशिश हुई कि भारत की आर्थिक रफ्तार थमने वाली है, छोटे और मध्यम उद्योग संकट में हैं और विकास की दिशा कमजोर हो रही है. राजनीतिक विमर्श में भी इन आशंकाओं को बार-बार दोहराया गया. लेकिन अब अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों ने इन दावों की वास्तविकता उजागर कर दी है. जब आईएमएफ जैसे वैश्विक निकाय भारत की आर्थिक मजबूती को स्वीकार करते हैं, तो यह केवल आंकड़ों का खेल नहीं, बल्कि नीतिगत स्थिरता और संरचनात्मक सुधारों की पुष्टि भी होती है.

आईएमएफ द्वारा वैश्विक विकास दर को घटाकर लगभग 3.1 प्रतिशत कर देना इस बात का संकेत है कि दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाएं दबाव में हैं. यूरोप, अमेरिका और चीन जैसे प्रमुख आर्थिक केंद्र भी विभिन्न कारणों से धीमी गति का सामना कर रहे हैं. युद्ध, भू-राजनीतिक तनाव, महंगाई और सप्लाई चेन की बाधाएं, इन सभी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है. ऐसे समय में भारत का अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन अपने आप में महत्वपूर्ण है.

भारत की इस मजबूती के पीछे कई ठोस कारण हैं. सबसे पहला है मजबूत घरेलू मांग, जो वैश्विक झटकों के बावजूद अर्थव्यवस्था को सहारा देती है. दूसरा बड़ा कारक है डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार, जिसने लेन-देन, सेवाओं और उद्यमिता को नई ऊर्जा दी है. तीसरा महत्वपूर्ण पहलू मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में हो रहे सुधार हैं, जिनमें 'मेक इन इंडिया' और उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं की भूमिका अहम रही है. इन प्रयासों ने भारत को केवल उपभोक्ता बाजार नहीं, बल्कि उत्पादन केंद्र के रूप में भी स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ाया है.

हालांकि यह तस्वीर पूरी तरह चुनौतियों से मुक्त नहीं है. भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार ने भी संकेत दिया है कि खाड़ी क्षेत्र में बढ़ते तनाव और संभावित युद्ध का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है. कच्चे तेल की कीमतों में उछाल, निर्यात पर दबाव और विदेशी निवेश में उतार-चढ़ाव जैसी समस्याएं सामने आ सकती हैं. यह भी सच है कि भारत पूरी तरह वैश्विक प्रभावों से अछूता नहीं रह सकता.

फिर भी, यह मानना होगा कि भारत की अर्थव्यवस्था आज पहले की तुलना में कहीं अधिक लचीली और सक्षम बनी है. नीतिगत सुधार, बुनियादी ढांचे में निवेश और वित्तीय अनुशासन ने इसे झटकों को सहने की ताकत दी है. जरूरत इस बात की है कि सरकार इस गति को बनाए रखते हुए रोजगार सृजन, ग्रामीण आय और छोटे उद्योगों की मजबूती पर भी समान रूप से ध्यान दे. कुल मिलाकर आईएमएफ और विश्व बैंक की मुहर केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि एक संकेत है,भारत सही दिशा में बढ़ रहा है. अब चुनौती यह है कि इस गति को स्थायी और समावेशी विकास में कैसे बदला जाए, ताकि इसका लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे.

भारत का फार्मा सेक्टर
नवाचार और युवाओं के लिए नया आकाश

अनुप्रिया पटेल

> शिक्षा और उद्योग के बीच की दूरी को कम करना हमारी प्राथमिकता है. जब तक हमारे कॉलेजों में पढ़ाया जाने वाला पाठ्यक्रम और उद्योग की जरूरतें एक समान नहीं होंगी, तब तक हम जनसांख्यिकीय लाभांश का पूरा लाभ नहीं उठा पाएंगे .इसीलिए, हम उद्योग-अकादमिक साझेदारी को मजबूत कर रहे हैं .इसी दिशा में, शिक्षा और उद्योग के बीच तालमेल बिठाने के लिए नाईपर और उद्योग के बीच 356 एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए हैं. साथ ही स्किल डेवलपमेंट मिशनों के माध्यम से छात्रों को सीधे कंपनियों के साथ जु?ने के मौके दिए जा रहे हैं. इससे न केवल युवाओं की रोजगार क्षमता बढ़ेगी, बल्कि भारत एक ग्लोबल इनोवेशन हब बनेगा .औषधि क्षेत्र का विकास जीडीपी बढ़ाने के साथ-साथ देश के युवाओं को सशक्त बनाने का भी एक मिशन है. ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की नींव हमारे युवा वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों के कंधों पर है.

भारत आज दुनिया की फार्मेसी के रूप में अपनी पहचान मजबूत कर चुका है, और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत' के विज़न के अनुरूप अब हम केवल जेनेरिक दवा बनाने वाले देश से आगे बढ़कर एक नवाचार-आधारित वैश्विक शक्ति बनने की दिशा में अग्रसर हैं. हमारी सरकार का उद्देश्य ऐसी नीतियां बनाना है जिससे देश के हर नागरिक कम कीमत में गुणवत्तापूर्ण दवाएं से मिल सकें. साथ ही सरकार निरंतर अनुसंधान और विकास को बढ़ावा दे रही है और भारतीय फार्मा उद्योग को वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए काम कर रही है.

भारत की अब तक की सफलता उसकी उत्पादन क्षमता, लागत दक्षता और गुणवत्ता मानकों पर आधारित रही है. विश्व की लगभग 20 प्रतिशत जेनेरिक दवाओं और 60 प्रतिशत वैक्सीन आपूर्ति के साथ देश ने वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. इसको देखते हुए भारत सरकार ने 8 से 10 वर्षों में देश को उच्च-मूल्य, नवाचार-आधारित बायोफार्मा और उन्नत चिकित्सीय उत्पादों का वैश्विक केंद्र बनाने का लक्ष्य रखा है. इसकी आधारशिला के रूप में हालिया केंद्रीय बजट में घोषित ?10,000 करोड़ की 'बायोफार्मा शक्ति' पहल महत्वपूर्ण है. यह कार्यक्रम देश में वैज्ञानिक अनुसंधान, नवाचार आधारित उद्योगों और अगली पीढ़ी की दवाओं के विकास को गति प्रदान करेगा. आर्थिक आंकड़े भी इस बात को दर्शाते हैं कि भारत का फार्मास्युटिकल उद्योग वर्तमान में 50 अरब डॉलर का है. जिस रफ्तार से हम आगे बढ़ रहे हैं, 2030 तक इसके 130 अरब डॉलर तक पहुंचने की पूरी संभावना है. इसे केवल संख्या नहीं, बल्कि देश के लाखों युवाओं के लिए बेहतर भविष्य के रोडमैप के तौर पर भी देखने की जरूरत है.

वर्तमान में फार्मास्युटिकल उद्योग प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से 30 लाख से अधिक लोगों को रोजगार दे रहा है. 2030 तक हेल्थकेयर और फार्मा क्षेत्र में 20 से 25 लाख नए रोजगार सृजित होने की उम्मीद है. बायोफार्मा, मेडटेक और क्लीनिकल रिसर्च जैसे उभरते क्षेत्रों ने संभावनाओं के नए द्वार खोल दिए हैं. हमारी सरकार का मानना है कि युवाओं की सफलता की नींव एक मजबूत शैक्षणिक ढांचे पर टिकी होती है. इसी विजन को ध्यान में रखते हुए, केंद्रीय बजट में फार्मा सेक्टर के लिए और भी कई क्रांतिकारी कदम उठाए गए हैं. सरकार ने देश में तीन नए राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर) स्थापित करने का निर्णय लिया है. इसके साथ ही, वर्तमान में कार्यरत सात नाईपर संस्थानों को अपग्रेड किया जा रहा है.

इन सात संस्थानों में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना की गई है, जो अनुसंधान और विकास को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे. इन केंद्रों के माध्यम से विशेषक्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है—नाईपर मोहाली में एंटी-वायरल और एंटी-बैक्टीरियल दवाओं की खोज एवं विकास, नाईपर अहमदाबाद में मेडिकल डिवाइसेज, नाईपर हैदराबाद में बल्क ड्रग्स, नाईपर कोलकाता में फ्लो केमिस्ट्री और सतत विनिर्माण, नाईपर रायबरेली में नोबल ड्रग डिलीवरी सिस्टम, नाईपर गुवाहाटी में फाइटोफार्मास्यूटिकल्स तथा नाईपर हाजीपुर में बायोलॉजिकल थेरैप्यूटिक्स पर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किए गए हैं. इन संस्थानों का सीधा लाभ हमारे विद्यार्थियों को मिलेगा. नाईपर केवल डिग्री देने वाले संस्थान नहीं रह जाएंगे, बल्कि वे ऐसे केंद्र बनेंगे जहां छात्र उद्योग की वास्तविक चुनौतियों पर काम करेंगे. इससे हमारे छात्र केवल जॉब सीकर नहीं बल्कि जॉब क्रिएटर और नवाचारी बनेंगे. बदलते दौर में काम करने के तरीके बदल रहे हैं. अनुमान है कि 2030 तक फार्मा सेक्टर के लगभग 30-35 प्रतिशत कार्यबल को री-स्किलिंग यानी नए कौशल सीखने की जरूरत होगी.

(लेखक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री हैं.)

महाकौशल की डायरी
गुटबाजी की शिकायत कहीं कुर्सी न ले डूबे...

अविनाश दीक्षित

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी में संगठन सृजन अभियान के जरिए नियुक्त किए गए 71 जिलाध्यक्षों के भविष्य का फैसला अगले सप्ताह होने जा रहा है. खबर है कि इस पूरी प्रक्रिया में जबलपुर के नगर अध्यक्ष सौरभ नाटी शर्मा और ग्रामीण अध्यक्ष संजय यादव के कामकाज की भी स्क्रूटनी की जाएगी. जिसकी मुख्य वजह ये है कि पिछले कुछ समय से इन दोनों पदाधिकारियों के विरुद्ध स्थानीय स्तर पर लगातार असंतोष के स्वर उभर रहे थे और ये खबर भोपाल में बैठे कांग्रेस के आला नेताओं के खेमे तक जा पहुंची थी. हालांकि दोनों ही नेता अपनी सक्रियता का दावा कर रहे हैं, लेकिन अब उन्हें केंद्रीय और प्रदेश नेतृत्व के सामने अपनी सक्रियता उपयोगिता प्रमाणित करनी होगी. कुर्सी बचेगी कि जाएगी , के पेंच में फिलहाल कांग्रेस नगर अध्यक्ष और ग्रामीण नगर अध्यक्ष चिंतित नजर आ रहे हैं.

खबर है कि दिल्ली से अखिल भारतीय

कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि वामसी रेड्डी विशेष रूप से इस प्रक्रिया की मॉनिटरिंग के लिए भोपाल आ रहे हैं. प्रदेश संगठन की योजना के अनुसार जिलाध्यक्षों के कार्यों का पिछले 2 महीनों में 2 बार प्रारंभिक आंकलन किया जा चुका है. आगामी समीक्षा बैठक को अंतिम और निर्णायक माना जा रहा है, जिसमें कमजोर प्रदर्शन करने वाले प्रभारियों पर गाज गिरना तय माना जा रहा है. संगठन के गलियारों में यह चर्चा जोरों पर है कि जिन जिलों में गुटबाजी चरम पर है या जहां से शिकायतों का पुलिंदा प्रदेश मुख्यालय पहुंचा है, वहां नेतृत्व परिवर्तन की सम्भावना ज्यादा है. वामसी रेड्डी की भोपाल में मौजूदगी यह स्पष्ट संकेत दे रही है कि केंद्रीय हाईकमान इस बार संगठन की मजबूती को लेकर किसी भी प्रकार का समझौता करने के पक्ष में नहीं है. अर्से से गुटबाजी में जबलपुर का नाम भी चर्चाओं में रहता आया है, ऐसे में सौरभ नाटी शर्मा और संजय यादव के माथे में भी चिंता की लकीरें अभी से नजर आने लगीं हैं. विदित हो कि कांग्रेस प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी 15 से 18 अप्रैल तक लगातार 4 दिनों तक संभागवार समीक्षा बैठकों का संचालन कर रहे हैं. पीसीसी मुख्यालय में होने वाली इन बैठकों में सभी जिलाध्यक्षों को व्यक्तिगत तौर पर उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं. इस दौरान संगठन निर्माण की प्रगति, क्षेत्रीय चुनौतियों और भविष्य की चुनावी रणनीति पर बिंदुवार चर्चा होगी. जबलपुर के परिप्रेक्ष्य में यह बैठक इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां का एक बड़ा असंतुष्ट खेमा पिछले काफी समय से सौरव शर्मा और संजय यादव के खिलाफ मोर्चा खोले हुए है. अब यह देखना होगा कि इन शिकायतों को कांग्रेस के शीर्ष नेता किस नजरिये से देखते हैं और दोनों को क्या निर्देश देते हैं. कानाफूसी है कि जबलपुर कांग्रेस के भीतर मची खींचतान के बीच यह समीक्षा सप्ताह पार्टी की अंदरूनी राजनीति में बड़े फेरबदल का आधार बन सकता है.

मोटी फीस वसूलने वाले निजी स्कूल निकले फिसड्डी...

मोटी फीस, सुविधाओं के नाम पर सिर्फ रस्मअदायगी, दिखावा करने वाले जबलपुर के प्रतिष्ठित कई सारे निजी स्कूलों में बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा, पढ़ाई की कलई उस वक्त खुल गई जब शहर के सरकारी स्कूलों का कक्षा दसवीं, 12वीं का परीक्षा परिणाम निजी स्कूलों की तुलना में कहीं बेहतर सामने निकलकर आया. सवाल ये खड़े हुए कि क्या निजी स्कूलों द्वारा सिर्फ कमाई की जा रही है.

आधी रात होते ही खुल जाते हैं शराब के एटीएम...

कहीं खुफिया होल तो कहीं खुफिया खिड़की तो कहीं कटी हुई शटर.. ये तीनों कलात्मक प्रयास इन दिनों जबलपुर के शहरी और ग्रामीण अंचलों में स्थित शराब दुकानों में देखे जा रहे हैं. इन जगहों में रात को उस वक्त शराब की बोतलें बढ़ी हुई कीमतों में बेची जातीं हैं जब निर्धारित समय पर शराब दुकान बंद हो जाती है. कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि ये खुफिया होल, खिड़कियां शराब के एटीएम के जैसे काम कर रहे हैं. हाल ही में एक तस्वीर गढ़ा त्रिपुरी चौक स्थित शराब दुकान की सामने आई जहां संचालक ने बड़े ही शातिराना अंदाज में शराब दुकान के किनारे एक खुफिया होल करवाया और फिर शुरू हो गया कालाबाजारी का खेल. इस शराब दुकान में सवाल इसलिए ज्यादा खड़े हुए क्योंकि शराब दुकान से करीब बीस कदम की दूरी पर गढ़ा पुलिस थाना स्थित है और त्रिपुरी चौक में अधिकतर रात के वक्त पुलिस चैकिंग प्वाइंट भी लगाती है.

नोएडा के आंदोलन से उठते प्रश्न

समान काम के लिए समान वेतन की मांग होना स्वाभाविक है. हरियाणा में न्यूनतम वेतन में 35 प्रतिशत वृद्धि की गई जबकि पड़ोसी उत्तर प्रदेश के नोएडा में अनेक वर्षों से वेतन वृद्धि नहीं की गई. जब श्रमिक 8,000 से 15,000 रुपए में 12 घंटा काम करने पर मजबूर होंगे, साप्ताहिक अवकाश नहीं मिलेगा, ओवरटाइम कराने पर भी कम पैसे दिए जाएंगे तथा नौकरी पर तलवार लटकी रहेगी तो असंतोष बढ़ना स्वाभाविक है. हरियाणा के गुरुग्राम की एक कंपनी में 3 अप्रैल से आंदोलन शुरू हुआ जो अनेक कंपनियों में फैल गया.

परिस्थिति विकट होती देखकर हरियाणा में वेतन वृद्धि करनी पड़ी. वहां अकुशल श्रमिक का वेतन 15,220 रु., अर्धकुशल का 16,780 रु., कुशल श्रमिक का 18,500 रुपए तथा सर्वाधिक कुशल का 19,425 रुपए वेतन दर निश्चित किया गया. इसका असर नोएडा में पड़ा. हरियाणा सरकार के समान यूपी में भी न्यूनतम वेतन बढ़ाने, कार्यस्थल पर सुरक्षित वातावरण, साप्ताहिक अवकाश, महिलाओं को सुरक्षा, शिकायत निवारण केंद्र स्थापित करने जैसी मांग की गई. इस पर ध्यान न देने से आंदोलन भड़का. पहले 2 दिन आंदोलन शांत था लेकिन सोमवार को हिंसक हो गया. श्रमिकों की दलील थी कि पश्चिम एशिया युद्ध से महंगाई बढ़ी है. हर महीने गैस सिलेंडर के दाम बढ़ रहे हैं. जीवनयापन कठिन हो गया है. सिर्फ नोएडा ही नहीं, हरियाणा के मानेसर व पानीपत तथा गुजरात के सूरत में भी श्रमिक रास्ते पर उतरे हैं. नए श्रम नियमों में 12 घंटे तक काम लेने की छूट है लेकिन वेतन न बढ़ने से श्रमिकों में असंतोष पनप रहा है. बीजेपी शासित किसी भी राज्य में आंदोलन हुआ तो शंका होती है कि विरोध प्रदर्शन के पीछे अर्बन नक्सल का हाथ है. यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आरोप लगाया कि आंदोलन हिंसक होने के पीछे समाज विरोधियों का हाथ है जो वॉट्सएप ग्रुप से भड़काने का काम करते हैं. पुलिस ने कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया. यह कहना आसान है कि नोएडा के श्रमिक आंदोलन का उद्देश्य नक्सलवाद फैलाना या देशद्रोही कृत्य करना है लेकिन असंतोष का मूल कारण श्रमिकों की मांगों की उपेक्षा ही है. इस बारे में संतुलित तरीके से विचार किया जाना चाहिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज
अब निकला 2 करोड़ रु. का पेन क्या होगा उससे सार्थक लेखन

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज कंप्यूटर के जमाने में कलम की कीमत क्या रह गई! कंप्यूटर फ्रेंडली पीढ़ी कलम की दुश्मन बन गई है. अब तो हस्ताक्षर भी डिजिटल किए जाते हैं. किसी दफ्तर में जाओ तो इनेगिने लोगों की जेब में पेन मिलेगी. एक जमाना था जब पार्कर और शेफर्स जैसी पेन रखने वाला व्यक्ति नफीस मिजाज का और हैसियतदार माना जाता था.'

हमने कहा, 'दुनिया में सबसे पुराना पेन गणेशजी के पास था. परशुराम अपने आराध्य शंकरजी के दर्शन के लिए कैलाश पर्वत पर गए. गणेशजी ने उन्हें रुकने को कहा तो दोनों में युद्ध हुआ. परशुराम ने फरसे से प्रहार कर गणेशजी का दांत तोड़ दिया. गणेशजी ने उसी टूटे दांत को पेन की तरह इस्तेमाल किया. वेदव्यास श्लोकों का डिक्टेशन देते चले गए और गणेशजी ने पूरा महाभारत लिख डाला. एक श्लोक का अर्थ है कि यदि असित गिरी नामक काले पर्वत को समुद्र के जल में घोलकर स्याही बनाने के बाद वटवृक्ष की टहनी को लेखनी बनाकर देवी सरस्वती कितना भी लिखें तो भगवान विष्णु के यश का पूर्ण वर्णन नहीं कर सकतीं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, 1950 के दशक में स्कूली बच्चे स्याही की दवात में होल्डर या टाक डुबोकर लिखा करते थे. हर वाक्य के बाद होल्डर की निब को दवात में डुबोना पड़ता था. मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यास ऐसी ही कलम से लिखे थे. इसके बाद स्याही भरने वाली फाउंटेन पेन प्रचलित हुई. तब कैमल, सुलेखा, पार्कर इंक जैसे ब्रांड की स्याही मिला करती थी. 1960 के बाद बॉलपेन और फिर रोलर पोन प्रचलित हुए. आज सस्ती यूज एंड थ्रो वाली 5 रुपए की पेन से लेकर करोड़ों रुपए वाली पेन भी उपलब्ध हैं. मांट ब्लांक ने जिसे फ्रेंच में मां ब्लां कहा जाता है, 223,000 डॉलर या 2.07 करोड़ रुपए की नई पेन सीरीज जारी की है. इन रंगबिरंगी कलमों पर सुंदर सुनहरी डिजाइन है. शौकीन व कद्रदान धनवान लोग इस पेन को खरीदकर अपने कलेक्शन में रख सकते हैं.'

हमने कहा, 'कलम संग्रहित करने से क्या फायदा! वह लिखने के लिए होती है. लेखकों की कलम क्रांति ला सकती है. पत्रकारों को कलम का सिपाही माना जाता रहा है. क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत गणेश शंकर विद्यार्थी ने कानपुर से 'प्रताप' नामक अखबार निकाला था जिसमें कुछ समय शहीद-ए-आजम भगतसिंह ने भी काम किया था. माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' नामक पत्र निकाला था. 'नवभारत' ने 1934 से प्रकाशित होकर राष्ट्रीय चेतना जगाई थी. आजादी की लड़ाई के दौरान पत्रकारों के बारे में कहा गया था जो कलम सरीखे टूट गए पर झुके नहीं, उनके आगे ये दुनिया शीश नवाती है, जो कलम किसी कीमत पर बेची नहीं गई, वो तो मशाल की तरह उठाई जाती है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12231
- डॉ. सागर खादीवाला

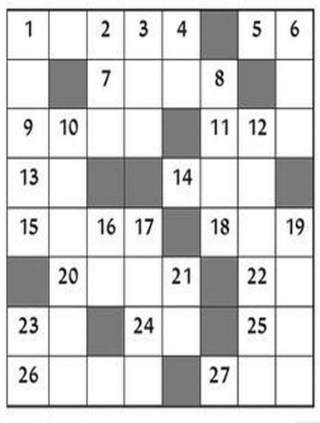

ऊपर से नीचे
1. नरक में जाने वाला 2. पति का छोटा भाई 3. सांस लेना (सं.) 4. कण, दाना, सूजी, 6. धारण करने वाला (सं.) 8. सरलता, भोलापन 10. उद्धार, निस्तार, भवसागर से पार करने वाला (ईश्वर) 12. वह लेख जिसमें वसीयत की गई हो (उर्दू) 16. 'मैं' का संबंधकारक रूप 17. खपड़े की छाई हुई छत 19. नगर, देश (सं.) 21. चौपायों के स्तन 23. पिता का पिता, बड़ा भाई

बाएं से दाएं
1. स्फटिक का शिवलिंग जो नर्मदा नदी से निकलता है (सं.) 5. घोड़े की जाति का एक प्रसिद्ध चौपाया, खर, मूर्ख 7. विश्वास न करने वाला, भुलावे में डालने वाला, शक करने वाला 9. काटने से बचा हुआ छोटा रद्दी टुकड़ा 11. दौड़कर चलने वाला व्यक्ति, हरकारा (सं.) 13. गहरा, गड्ढा, गुफा, गाली 14. पारस्परिक 15. दोष निकालना 18. आंख, नेत्र 20. आकाश (सं.) 22. आर्द्र, गीला, शीतल (उर्दू) 23. रखने वाला, पत्नी, सूली, फांसी 24. रात्रि, रात 25. माप, नापने का काम, परिमाण 26. स्वभाव से दानी 27. जामाता, जमाई, कन्या का पति

Solution 12230

ज	न	का	त्म	जा	■	सा	ह
ला	ग	त	■	त	■	र	वा
धा	■	ना	न	क	पं	थी	■
र	ज	■	त	■	क	■	आ
■	ल	ला	म	■	■	■	च
■	स	म	स्त	■	स	रू	र
ज	मा	■	क	रा	रो	प	ण
ब	धि	र	■	मा	द	क	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र अथवा व्यक्ति विशेष का सहयोग मिलेगा. स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा. शासन से लाभ प्राप्त होगा. वर्ष के मध्य में शत्रु वर्ग प्रबल रहेगा. भोग विलास में धन व्यय होगा. मित्रों का सहयोग रहेगा. सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वर्ष के अन्त में व्यर्थ वाद विवाद से बचने का प्रयास करें. यात्रा में कष्ट होगा. शारीरिक चिन्ता और मानसिक कष्ट होगा. पारिवारिक परेशानी में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा. भोग विलास में धन व्यय होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्वजनों से मतभेद हो सकता है. मान सम्मान के प्रति सतर्क रहें. कर्क राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता में संलग्नता रहेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में परेशानी के बाद लाभ प्राप्त होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को मनोवांछित सफलता के योग है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के योग है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, व्यवहार कुशल, परिश्रमी, स्पष्टवादी तथा निड़र होगा. निर्णय लेने की अच्छी शक्ति रहेगी, अपने उद्देश्यों की पूर्ति के प्रति सचेत रहेगा. सभी के साथ अच्छा व्यवहार करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

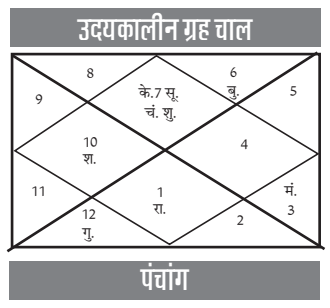

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण अमावस्या भृगुवासरे शाम 5/12, रेवती नक्षत्रे दिन 11/47, वैधृति योगे प्रातः 7/2 तदुपरि विष्कुम्भ योगे रातअंत 4/27, चतुष्पद करणे सू.उ. 5/40, सू.अ. 6/20, चन्द्रचार मीन दिन 11/47 से मेष, पर्व- स्नानदान श्राद्ध अमावस्या, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण अमावस्या को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, चीनी के भाव में मंदी होगी, जीरा, धनिया, सौंप, अजवाईन के भाव में मामूली नरमीं का रूख रहेगा. भाग्यांक 4220 है

मेष- निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें, आकस्मिक तनाव हो सकता है, निराशावादी विचारों को छोड़कर आशावादी बनें, कष्टों को भूलकर वर्तमान को बेहतर बनायें.

वृषभ- नयी आकांक्षाएं मन को उद्वेलित करेंगी, पुराने संबंधों में प्रगाढता बढेगी, बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. पुरानी बातों को भुलाने की चेष्टा करें.

मिथुन- किसी नयी योजना की ओर बढेंगे, महत्वाकांक्षा ऊँची प्रगति की ओर ले जायेगी, जरूरी कार्य सार्थक होने का योग है, कार्य में सहयोग मिलेगा.

कर्क- स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें, अनुकूल नैतिक कर्तव्यों का पालन करें, निकट संबंधों में पारदर्शिता रखें, छोटी छोटी बातों को भूलना हितकर रहेगा.

सिंह- अपने भविष्य को सुनियोजित करें, भविष्य संबंधी कुछ चिंताएं रह सकती हैं, बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. परिवार को एक सूत्र में बनाये रखने हेतु प्रयास करेंगें.

कन्या- कार्यों में अवरोध से मन अवसादग्रस्त होगा. मधुरवाणी से संबंधमें प्रगाढता बढेगी, जीविका के क्षेत्र में लाभ होगा, दायित्वों का निर्वहन होगा.

तुला- किसी नये कार्य की पूर्ति होगी, भवुकता व्यवहारिक जगत के अनुकूल चलने की चेष्टा करें. परिवार के विरोध का सामना करना पड़ सकता है.

वृश्चिक- मन धनागम की नयी युक्तियों की आर केंद्रित होगा, कार्य क्षेत्र में किसी सहकर्मी से मतभेद संभव है, जीवनसाथी का भावनात्मक स्नेह प्राप्त होगा.

धनु- मन पर नियंत्रण रख अपने कर्तव्यों के प्रति केंद्रित हों, किसी नये संबंध के प्रति ध्यान देना होगा, नवीन योजना बनेगी. थोड़ा संयमी और धैर्यवान बनें.

मकर- कुछ नयी सामाजिक व्यस्तताएं सामने आयेंगी, महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति होगी, किसी अचल संपत्ति के क्रय हेतु प्रयास प्रारंभ होंगे.

कुम्भ- संबंधों में आपका मन भावनात्मक आपूर्ति पर केंद्रित होगा, धार्मिक व पारंपरिक कार्यों में मन लगेगा, रोजगार के क्षेत्र में अपनी क्षमता का पूर्ण लाभ उठायें.

मीन- मन प्रसन्न व उत्साहित रहेगा, प्रियजनों का सानिध्य प्राप्त होगा, प्रणय संबंध मधुर रहेंगे, शासन व राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी.

SUDOKU 7363

9		2		4	1	7		
1						6		
5	7	3	2				4	
				9	4	8		
4		7				9		6
		5	8	3				
	3				6	5	9	1
		6						7
		9	1	8		2		4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7362

5	4	9	1	8	3	2	6	7
1	2	6	4	9	7	3	5	8
3	8	7	5	2	6	1	4	9
8	7	1	3	4	2	6	9	5
9	5	3	6	1	8	7	2	4
2	6	4	7	5	9	8	1	3
4	3	5	2	7	1	9	8	6
6	9	2	8	3	4	5	7	1
7	1	8	9	6	5	4	3	2